

Demand for the Bharat Ratna Award to noted litterateur late Annabhau Sathe

श्री धनंजय भीमराव महादिक (महाराष्ट्र): उपसभापति जी, मैं अपनी मातृभाषा मराठी में बोलने की अनुमति चाहता हूँ।

*"साहित्यरत्न ,महाराष्ट्र भूषण तथा लोकगायक अन्नाभाऊ साठे दलित साहित्य के संस्थापक के रूप में जाने जाते हैं। उनके साहित्यिक कार्य के कारण समाज के शोषित तथा वंचित वर्ग को आवाज़ मिली ,तथा सामाजिक न्याय की मुहिम और मजबूत हुई । उन्होंने अपने लेखन से दलित समाज की व्यथा तथा उसके संघर्ष को अभिव्यक्ति दी, उनके साहित्य ने दलित समाज को उसकी अस्मिता से परिचय कराया तथा उसमें आत्मसम्मान की भावना पैदा की। उनके साहित्य में सामाजिक न्याय ,समता की बात होती थी तथा अन्याय पर कठोर प्रहार होता था।" मेरी रशिया की यात्रा "नामक अपने यात्रा-वृत्तान्त में उन्होंने रूस की समाजवादी व्यवस्था का वर्णन किया है , तथा" चित्रा "नामक उपन्यास में महिलाओं के सशक्तिकरण का विषय उठाया है। उनके साहित्य में बाल विवाह ,दहेज प्रथा पर पाबंदी तथा अंधश्रद्धा जैसे विषय उठाए गए हैं ,समाज में अन्याय , जातिगत भेदभाव का विरोध किया गया है और साथ ही श्रमिकों का संघर्ष भी दिखाई देता है। उन्होंने 35 उपन्यास 10 ,लोक-नाटक , 24लघुकथाएं 10 ,जीवनी 1 ,नाटक तथा 1 यात्रा-वृत्तान्त लिखा है। उनके" फ़कीरा "नामक उपन्यास को राज्य सरकार द्वारा पुरस्कृत किया गया था। अन्नाभाऊ साठे जी के साहित्य ने भारतीय साहित्य तथा समाज पर गहरा प्रभाव छोड़ा है। उनके साहित्य से अनेक विचारकों तथा लेखकों को प्रेरणा मिली है। उनके साहित्य का रूसी ,चेक , पोलिश तथा जर्मन भाषा में अनुवाद हुआ है। शाहू महाराज ,महात्मा फुले तथा अंबेडकर जी के विचारों से प्रेरित हो कर महिला ,दलित तथा वंचित समाज के उत्थान के लिए उन्होंने अथक प्रयास किए। अन्नाभाऊ साठे जी का साहित्य ,केवल साहित्य के रूप में ही नहीं जाना जाता , अपितु वह सामाजिक परिवर्तन का एक सशक्त माध्यम बना। इसलिए ,मैं आपके माध्यम से केंद्र सरकार से निवेदन करता हूँ कि साहित्य रत्न ,महाराष्ट्र भूषण तथा लोकगायक अन्नाभाऊ साठे जी को भारत के सर्वोच्च नागरिक पुरस्कार" भारत रत्न "से सम्मानित किया जाए, धन्यवाद।"

MR. DEPUTY CHAIRMAN: The following hon. Members associated themselves with the matter raised by the hon. Member, Shri Dhananjay Bhimrao Mahadik (Maharashtra): Dr. Sasmit Patra (Odisha), Shri Devendra Pratap Singh (Chhattisgarh), Dr. Bhim Singh (Bihar), Shri Amar Pal Maurya (Uttar Pradesh), Shri Dorjee Tshering Lepcha (Sikkim), Shri Govindbhai Laljibhai Dholakia (Gujarat), Dr. Anil Sukhdeorao Bonde (Maharashtra), Dr. Fauzia Khan (Maharashtra), Dr. Bhagwat Karad (Maharashtra), Shri Banshilal Gurjar (Madhya Pradesh), Shri Chunnilal Garasiya (Rajasthan), Shrimati Maya Naroliya (Madhya Pradesh), Shri Madan Rathore (Rajasthan), Ms. Kavita Patidar (Madhya Pradesh), Shrimati Geeta alias Chandraprabha (Uttar Pradesh) and Dr. Kalpana Saini (Uttarakhand).

* Hindi translation of the original speech delivered in Marathi.

Thank you, Dhananjay Bhimrao Mahadikji. Now, Shri Brij Lal on 'Demand to Name a Road in Delhi after Lakhi Shah Banjara'.

Demand to name a road in Delhi after Lakhi Shah Banjara

श्री बृजलाल (उत्तर प्रदेश): उपसभापति महोदय, मैं दिल्ली में किसी सड़क का नाम लखीशाह बंजारा, उर्फ लाखा बंजारा के नाम पर रखने की माँग करने के लिए खड़ा हुआ हूँ। महोदय, लखीशाह बंजारा 17वीं शताब्दी के सबसे बड़े ट्रांसपोर्टर थे। उनके पास एक लाख से ज्यादा बैल थे, जिससे वे ट्रांसपोर्ट का काम करते थे। 1675 में वे रायसीना हिल में कैंप कर रहे थे। उसी दौरान, 1675 में गुरु तेग बहादुर जी आनंदपुर साहिब में थे और वहाँ पर पंडित कृपा राम, कश्मीरी ब्राह्मण भी थे, उनका जत्था आया। उन्होंने कहा कि महाराज जी बचाइए, औरंगजेब हम लोगों को इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य कर रहा है। वह वही पीरियड है, जब हिन्दुओं को इस्लाम स्वीकार कराने का अभियान चलाया जा रहा था। उसी दौरान मेरे पुरखे - हम लोग कोरी और कोली समाज के हैं, कपड़ा बुनना हमारा काम था। उस समय औरंगजेब ने कहा कि या तो इस्लाम स्वीकार करो या पेशा छोड़ो। हमारे समाज के पास कपड़ा बुनने के अलावा कोई पेशा नहीं था। उस समय जो कन्वर्ट हो गए, वे 'जुलाहे' कहलाए, उसके बाद वे 'अंसारी' कहलाए जाते हैं। आज पूर्वी उत्तर प्रदेश में गोरखपुर, मऊ, आजमगढ़, बनारस में ये जो 'अंसारी' हैं, वे हमारे समाज के हैं, जिनको औरंगजेब ने कन्वर्ट किया था। हमारी बिरादरी, जो हिन्दु रह गई, इसके पास न पेशा है और न ही खेती है।

महोदय, अब मैं लाखा बंजारा पर आता हूँ। उस समय पंडित कृपाराम जी आए। गुरु तेग बहादुर जी ने आश्वासन दिया कि मैं आपकी मदद करूंगा। उसके बाद गुरु जी अपने शिष्यों के साथ आगरा में 'गुरु का ताल' आ गए। वहाँ से औरंगजेब ने उनको उठवा लिया। उनको चांदनी चौक लाया गया, इस्लाम स्वीकार करने के लिए बाध्य किया गया। 9 नवंबर, 1675 को उनके शिष्य मती दास जी को आरे से चीर दिया गया। दूसरे दिन, 10 नवंबर को उनके शिष्य सती दास को रुई में लपेट करके जला दिया गया। भाई दयाल दास को हाथ-पैर बांध करके, कड़ाहे में डाल करके, उबाल दिया गया। जब गुरु जी को टॉर्चर किया गया, बाध्य किया गया, लेकिन जब वे तैयार नहीं हुए, तो 24 नवंबर, 1675 को उनका सिर कलम कर दिया गया। उसके बाद वे लोग लाश के साथ भेद भी करते थे। लाखा बंजारा ने अपने सैकड़ों बैलों के साथ हल्ला बोल दिया। उन्होंने उनकी बाँड़ी को उठाया और उसे ले जाकर, उसका जो अपना घर था, उसमें उसे रख करके आग लगा दी और गुरु जी का cremation किया। आज, जहाँ सिर काटा गया था, वहाँ 'गुरुद्वारा शीशगंज' है, जहाँ उन्होंने cremate किया, वह है - 'गुरुद्वारा रकाबगंज'।

महोदय, मेरी एक डिमांड है कि लाखा बंजारा वे हैं, जिन्होंने सरोवर बनाए, उनका उसमें बहुत रोल है, तो मेरा कहना है कि यहां दिल्ली में तमाम विदेशी आक्रमणकारियों के नाम पर रोड्स हैं, एक रोड पर से उनका नाम हटा करके, उस पर लाखा बंजारा का नाम रखा जाए, उनके नाम पर एक रोड किया जाए, जिनका हिंदुत्व की रक्षा के लिए बहुत बड़ा योगदान है।